मनुष्य बनो

12/82

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

निष्काम सेवा, ब्रह्मचर्य पालन,

क्षक

दयाल फकीर चन्द जी महार

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजा

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ८—०० है।

—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

R. S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

दिसम्बर
१९८

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३३	पौष संवत २०३९ वि०	सं०

प्रार्थना

तेरी गति मति कौन लखे !

(१)

वेद न जानें महिमा तेरी, ऋषि मुनी फिरें भर्म की फेरी ।
शारद तेरे दर की चेरी, आन ही आन बके ॥

(२)

अपरम्पार पार निःपारा, तू है सार अ सार कासारा ।
अजर अमर अविनाशी प्यारा, घट घट व्याप रहे ॥

(३)

नहीं एक और नहीं अनेका सब विधि क्रिया विचार विवेका ।
भूले ज्ञानी ध्यानी भेषा, कोई न मर्म लहे ॥

(४)

तू प्रकाश है तू परछाईं, तू है परम तत्व तू झाईं ।
कैसे अस्तुति करूँ गुसाईं ! सुख बुध भर्म बहे ॥

(५)

अनहित सहित सकल हितकारी, निराधार तू जगदाधारी ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सेवक शरन चहे ॥

(१) प्रेम

हम तेरे लिये तरसते हैं । तू प्रकाश है । हमारे हृदय को प्रकाश मय कर दे । तू बल और शक्ति है । हमारी अबलता को दूर कर। तू सुख का भण्डार है । आजा ! हमें सुखी कर दे । ऐ प्रेम ! तू विलक्षण वस्तु है । जिसने प्रेम के रंग को धारण कर लिया उस पर माया मोह का रंग नहीं चढ़ सकता । प्रेमी को न किसी से द्वेष होता है न ईर्षा । वह सब में पवित्रता और भलाई देखता है । इस प्रेम का केन्द्र या आधार ईश्वर है जिसमें सब हैं, जो सब में है और जिससे सब हैं ।

(२) मेरा प्यार

सारा जगत मेरी अपनी आत्मा है । मैं सारे जगत को प्यार करता हूँ । जो ईश्वर भक्त हैं वह मुझको प्यारे हैं । जो ईश्वर भक्त नहीं वह भी मुझको प्यारे हैं मुझको क्या अधिकार कि किसी से केवल मतभेद के कारण घृणा करूँ ? जिन्होंने भक्ति पन्थ में अभी पाँव रक्खा है वह भक्ति की दृष्टि से युवावस्था में हैं । जो भक्ति नहीं करते परन्तु अनजान में भक्ति की ओर खिंचे जा रहे हैं वह किशोर अवस्था में हैं जो भक्ति भाव से एक दम कोरे हैं वह अभी बाल्यावस्था में हैं । यह सब मुझ को प्यारे हैं क्यों यह ईश्वर के पुत्र हैं ।आस्तिक हो या नास्तिक सब मिलकर जगत् को पूर्ण अवस्था में दिखाने का यत्न करते हैं । मतभेद अंश अन्शी भाव में रहता है । शरीर में हाथ पाँव नाक कान सभी होते हैं । सब एक से नहीं होते हाथों से पांव के काम की आशा रखना भूल और भ्रम है हाथ को हाथ की दृष्टि से देखो और पाँव को पाँव की दृष्टि से । आँख के काम नाक के काम से भिन्न होते हैं परन्तु इस भिन्नता के कारण मनुष्य इनसे घृणा नहीं करता क्यों कि सब मिलकर शरीर का नाम पाते हैं । मनुष्य अपने शरीर को प्यार करता है । इसी प्रकार अनेक पशु, अनेक जीव जन्तु, अनेक वनस्पति और अनेक तारा मण्डल सूर्य

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

और चाँद इत्यादि सब मिलकर एक पूर्ण सृष्टि बनते हैं। यह सृष्टि ईश्वर का शरीर है। जिसकी दृष्टि ईश्वर पर रहती है वह कैसे किसी से घृणा कर सकता है? इस कारण यह सारा संसार मुझको प्यारा है। मैं किससे घृणा करूँ! और किसको राग और द्वेष की दृष्टि से देखूँ।

ईश्वर व्यापक है (३)

परम संत कबीर साहिब की वाणीः—

"ज्यों नयनों में पूतली, त्यों खालिक$_1$ घट माँह।
मूरख लोग न जानहीं, बाहिर ढूँढ़न जाँह॥
पुहुप$_2$ मध्य ज्यों बास है, व्याप रहा जग माँह।
संतों मांहीं पाइये, और कहूँ कछु नाँह॥
ज्यों तिल भीतर तेल है ज्यों चकमक$_3$ में आग।
तेरा प्रीतम तुझ में, जाग सके तो जाग॥

रोम रोम में, अणु अणु में, बूँद बूँद में वही चमक रहा है। वही हर जगह दिखलाई दे रहा है। शत्रु मित्र सब में रमता राम रम रहा है। हर जगह परिपूर्ण हो रहा है। उसको देखो और सार को समझो। फिर तुम भी मेरे ही समान सबको प्यार करने लगोगे। सब में तेरी ही आत्मा है। अपने रूप को इनमें देख! और तुझको शान्ति मिलेगी। तू कहां मारा मारा फिरता है भ्रम के परदे को फाड़ डाल जिसमें तुझको हर जगह ईश्वर का दर्शन प्राप्त हो। जो प्रचण्ड अग्नि की ज्वाला में प्रकाशवान है, जो फूलों और पत्तों में रंग और गन्ध बना हुआ है, जो समुद्र की लहरों में लहरा रहा है, जो पानी के बहाव में बह रहा है वह ईश्वर ही तो है। तू और जगह क्यों ढ़ूँढ़ रहा है? इसके अतिरिक्त तेरा अपना हृदय आप प्रचण्ड अग्नि कुण्ड है, लहराता हुआ समुद्र और बहती हुई गंगा है इसे क्यों नहीं देखता? अभी तत्काल तुझे ईश्वर का दर्शन मिलेगा।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

दोहा

जा कारण जग ढ़ूँढ़िया, सो तो हिर्दय माँह ।
परदा दीया भर्म का, ताते सूझे नाँह ॥

मंगल कामना

२१) रु० श्रीमती डा० बी. के. भारद्वाज मोहन पुरी मेरठ ने अपने पौत्र (सुपुत्र राजीव) के जन्म पर मनुष्य बनो की सहयतार्थ भेजे हैं मालिक से कामना है कि वह बच्चे की आयु लम्बी करे एवं समस्त परिवार को सुख समृद्धि दें।

१०) रु० श्री मोटूमल सुन्दर लाल जोत वाणी भदरा जिला गंगा नगर एव १५) रु. श्री उमराव सिंह नगजीराम ने इटावा जिला उज्जैन ने मनुष्य बनो को सहायतार्थ भेजे हैं मालिक से कामना करते हैं वह उन्हें सुख समृद्धि प्रदान करे।

—+—

शोक समाचार

जगत माता इन्दौर वाली जो हजूर महाराज की बहुत भक्तनी थी ने १६-१२-८२ को अपना चोला छोड़ निज धाम चली गई है मालिक से कामना है कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं समस्त परिवार वालों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। इस अवसर पर श्रीमयी मुक्ता अग्रवाल ने मनुष्य बनो के लिये १००) रु. दान स्वरुप भेजे हैं।

सम्पादक

मानवधर्म प्रकाश

मिट गये सब भरम मन के, दिल में उजाला हो गया ।
जिन्दगी को खेल समझा, अनुभव का बोलबाला हो गया ॥
थी ख्वाइश दिल में बता जाऊँगा, उस भेद को ।
जिसको समझने के लिये 'फकीर' था बाबला हो गया ॥
गरज नहीं मतलब नहीं, बेख्वाइशी की हालत अपनी
लोगों का जीवन बने, यह मेरा शगल अब हो गया ॥

मैं उन भाइयों, महापुरुषों और लीडरों से, जो मानव-जीवन के सुधार के बहुत इच्छुक हैं, उनको पूज्य मानता हुआ, कुछ कहना चाहता हूँ मगर कहने से पहिले—

हाथ जोड़ नवाय मस्तक, सबसे माँगता हूँ क्षमा ।
जो कुछ है मौज लिखा रहो, वह है मेरे जीवन का तजुरबा ॥
बिन बुलाये महमान की, नहीं होती है कोई भी इज्जत ।
मगर इज्जत और मान के, दरजे से कुदरत ने बरी कर दिया
दर्द देकर दयाल बनाकर, मजबूर करके कोई है लिखा रहा ।
अपने बस की कोई बात नहीं, बस समझ लो मैं दीवाना हुआ ॥

संसार के दुखी लोग क्या चाहते हैं ? प्रत्येक व्यक्ति बता सकता है । धन, दौलत, इज्जत-मान बड़ाई अमन शान्ति । आगे बढ़कर भक्ति, ज्ञान और निज स्वरुप (परम तत्व) के साक्षात्कार की लालसा रखते हैं, । इसकी प्राप्ति के लिये हम क्या करते हैं :-

कोई कर्म उपाय पर जोर देता है, कोई करता है बन्दना ।
कोई छल कपट चतुराई से, मतलब है निकालता ॥
कोई मन्दिर और मसजिद में जाकर, करता है पूजा और बन्दिगी ।
कोई किसी मुरशिद के दर पर, मस्तक जाके टिकाता है ॥
कोई ईमानदारी और सचाई के, पहलू को अपनाता है ।
चलता सुराते मुस्तकीम पर और फल को उसके खाता ॥

सारे कर्म किये हैं मैंने, और तजुरबा अपनाया है।
सारी उम्र इसी खब्त में गुजरी, लिखदूँ जो समझ में आया है ।।

अपने जीवन के अनुभव को प्रगट करने के लिये मैंने कितनी एक पुस्तकें-तशरीह हिदायतनामा तशरीह बारहमासा, आबागमन विश्वशान्ति, मनुष्य बनो आदि लिखीं और मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि जो कुछ भी मनुष्य को मिलता है वह उसके अपने कर्म का फल होता है। मैं कर्म का अर्थ इच्छा, विचार और संकल्प के लेता हूँ। इसी बात को प्राचीन काल में ऋषियों मुनियों और महापुरुषों ने समझाया है। इसकी पुष्टि वेद शास्त्र व अन्य ग्रन्थों से होती है। उन्होंने भिन्न 2 उपाय या साधन वर्णन किये हैं, लेकिन मन की चंचलता के कारण मनुष्य उन पर अमल करने में कठिनाई प्रतीत करता है। यदि अमल के इच्छुक प्रयत्न भी करते हैं तो मार्ग पेचीदा और लम्बा होने के कारण सफलता दृष्टिगोचर नहीं होती। इसलिये वर्तमान युग (कलयुग) में सफलता का सरल नुस्खा यदि है तो वह केवल नाम है।

कलि केवल एक नाम अधारा।
श्रुति स्मृति संत मत सारा ।।

मगर याद रखिये,

नाम रहे सतगुरु आधीना।

नाम में तीन बातें शामिल हैं ...(१) सुमिरन (२) ध्यान और (३) भजन। सुमिरन का अर्थ है याद करना। ध्यान का अर्थ है तसव्वुर (किसी का ध्यान बांधना) और भजन कहते हैं महवित प्राप्त करने को, लय होने को। इसके साधन के लिये आवश्यक है कि जिज्ञासू किसी पूर्ण पुरुष या इस भेद के ज्ञाता का सत्संग करे और उसकी हिदायत के अनुसार अमल करे वर्ना सफलता मिलना कठिन है।

गायत्री के प्राणायाम मंत्र में सात स्थानों का वर्णन है उसकी समानता संतों के वर्णित स्थानों से इस प्रकार की जा सकती है।

प्राणायाम के स्थान-ओं भू, स्वः महः, जनः

संतों के स्थान—सहस दल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न-महासुन्न

तपः, सत्यम्

भँवर गुफा, सतलोक

मैं विद्वान नहीं हूँ। निज अनुभव के आधार पर केवल सारांश में व्यख्या कर रहा हूँ।

(१) **सहस दल कंवल** यह रचानयें बाहर भी हैं और तुम्हारे अन्दर भी है। बाहरी रचना में यह सृष्टि का आधार कर्त्ता धर्त्ता है। इसी प्रकार तुम्हारे अन्दर का ज्योति स्वरूप जो तुम्हारा मन है, वह तुम्हारी जिन्दगी को बनाने वाला है और बिगाड़ने वाला भी है। (यह स्थान दोनों भोंओं के बीच में है)

जिस प्रकार की इच्छा तुम अपने मन में धारण करोगे पहले उसकी याद या सुमिरन दिल में स्थित होगी, फिर उसका रूप या ध्यान बनाओगे। उसके पश्चात् इच्छा का घनापन भजन के रूप में आकर दिल उसमें लय हो जायगा और उसी प्रकार के हालात वा ज्ञान पैदा होकर उस इच्छा को पूर्ति का प्रबन्ध कर देंगे। मगर यह याद रहे कि यदि तुम्हारी इच्छा नेकी और सचाई पर निर्धारित है तो उनका परिणाम सुखदायक और आनन्ददायक होगा और यदि वह इच्छा दूसरों को हानि पहुंचाने की है तो वह पूरी तो हो जायगी मगर उसका नतीजा सुखदायक न होगा। इसलिये हृदय की शुद्धि संतो ने मुख्य रखा है।

त्रिकुटी— रचना में यह स्थान बाहर भी है (नर देही में मस्तिष्क में सहस दल से कुछ ऊपर है) इसका मालिक ओंकार है। यह

तुम्हारे अन्तर में भी है और इसका आधार तुम्हारा मन है जिस में विवेक और समझ है। कुदरत में बाहर प्रत्येक कार्य किसी उसूल और तरीके से हो रहा है। इसी प्रकार मनुष्य को हर प्रकार का इल्म या ज्ञान चाहे वह साँसारिक हो पारमार्थिक हो या कोई और हो, अपने अन्तर में ध्यान और भजन से प्राप्त हो सकता है। तीनों के साधन की यहां भी जरूरत होगी। जिस प्रकार की वासना भलाई या बुराई को लेकर मनुष्य अमल करेगा, वैसा ही परिणाम निकलेगा हाँ यह मनुष्य की इच्छा पर निर्भर है कि वह कैसा इल्म करना चाहता है।

सम्भव है वर्तमान समय के कोई आचार्य्य महंत या गद्दी पति या पुस्तकों के बाणीजाल में फंसे हुये लोग मेरी बात को गलत ख्याल करें। मैं अपने अन्तर में दाखिल होकर सोचता हूं कि क्या मैं गलती पर हूँ ! लेकिन विचार करने के बाद इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मेरा अनुभव ठीक है। मैं निज अनुभव की बात कहता हूँ जो स्वार्थ और पक्षपात रहित हैं।

जब मुझे या किसी सत्संगी को कोई प्रबल इच्छा होती थी तो दाता दयाल को लिखा करते थे और वह जवाब देते थे कि ठीक हो जायगी। यदि वह इच्छा प्रबल होती थी तो पूरी हो जाती थी। इसके विरुद्ध यदि हम शक शुभा में रहते या दुविधा व भ्रम में पड़ जाते थे तो नाकामयाबी को मुँह देखना पड़ता था। मैंने स्वयं भी सत्संगियों में इसका तजुर्बा किया है। जब कोई ज़बरजस्त इच्छा वाला विश्रामी मनुष्य मेरे पास आता है तो मैं हमेशा उसे ताकतवर ख्याल दे देता हूँ। यदि उसने उस ख्याल को विश्वास के सहारे ले लिया है तो अपने लौकिक और पारलौकिक कष्टों से छुटकारा पाकर सफल हो जाता है। किसी ने कहा है: —

भावना पक्की हो मन में पक्का ही विश्वास हो।
क्यों न ऐसे जन की इस रचना में पूरी आस हो॥

आस में विश्वास और विश्वास विश्व की आस है।
जिस में यह विश्वास है वह कैसे जग में निराश हो।।

बहुत से भाई मुझे करामाती समझते होंगे। वास्तव में मेरे पास कोई करामात-नहीं है मुझे उसूल का इल्म है। हाँ, जो मनुष्य दुविधा का शिकार हो जाता है वह असफल रहता है। जो आशावादी होकर अपनी इच्छा या वासना में कमजोरी नहीं आने देता वह अपना काम बना लेता है।

सच्चे साधू या गुरु का काम मनुष्य को दुविधा से बचाना है। महाभारत की लड़ाई में अर्जन दुविधा में फँस गया था। कृष्ण ने गुरु रूप धारण करके समझा बुझाकर उसकी दुविधा संशय और भ्रम को दूर किया। उसने उनके ख्याल को बिश्वास के साथ ग्रहण किया और सफल हुआ।

हमारे ऋषिमुनियों का गायत्री मंत्र की शिक्षा देने का ध्येय यह था कि साँसारिक जीवन में हम सफल हों। इस मंत्र की तह में यह गुप्त भेद है कि "जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति से परे उस सूर्य्य का का दर्शन करो। वह तुम्हारी बुद्धियों का प्रेरक होगा। बुद्धि ज्ञान या सार समझ को प्राप्ति मनुष्य को साँसारिक जीवन में सफल बनाती है। जिस कदर लोगों ने साँसारिक जीवन में सफलता प्राप्त की है सबने जाने या अनजाने इसी सुमिरन ध्यान और भजन के उसूल पर अमल किया है। यह दूसरी बात है कि इनको उसूल का ज्ञान था या नहीं मगर स्वाभाविक रूप से असली जीवन में इसी उसूल ने काम किया है।

यहाँ सवाल किया जा सकता है कि दुनियावी इच्छाओं के पूरा करने के लिये सुमिरन और ध्यान किसका किया जाय और किस तरह किया जाय।

इस विषय में मेरा उत्तर यह है कि इस नाम रूप के जगत में नाम और रूप ही मदद कर सकते हैं। हिन्दू धर्म की पौराणिक

शिक्षा ने कमाल किया हुआ है। हर प्रकार की इच्छाओं के पूरा करने के लिये उन्होंने भिन्न भिन्न इष्टों का सुमिरन और ध्यान बताया है। धन की प्राप्ति के लिये लक्ष्मी का रूप बताया है विद्या की प्राप्ति को सरस्वती का और शक्ति के लिये दुर्गा का रूप बताया है। मगर इस कलियुग के समय में मनुष्य की जरूरतें बहुत हैं इसलिए सन्तों और फकीरों ने एक सहल सा नुसखा तजवीज किया है कि किसी अमली पूर्ण पुरुष के ध्यान से ही सब प्रकार की आवकताओं को पूरा किया जा सकता है।

हमारे शास्त्र सच्चे हैं और प्राकृतिक ज्ञान से भरे हुए हैं। चूँकि कलियुग में हर काम जल्दी से होता है और उसको जल्दी पूरा करने के लिये गुर, तरीका, तजबीज, तदबीर की भी जरूरत है, इसलिए गुरु रूप का ध्यान और गुरु का दिया हुआ नाम ही हर एक मंजिल व स्थान पर सब कुछ होता है, क्यों कि इस ध्यान में पूर्णता मानी हुई है।

मुझे शब्द नहीं मिलते कि अपने भाव को पूर्ण रूपेण प्रगट कर सकूँ कि ऐ मानव ! तेरे दिल में शक्ति का भंडार है। तू प्रकृति माता का लाड़ला बेटा है। उसने प्रारम्भ से तुझमें अनन्त शक्ति प्रदान की है लेकिन तुझे ज्ञान नहीं है। तू इस शक्ति से काम लेना नहीं जानता और अनजाने में कभी कभी अनुचित कृत्यों से उस शक्ति को अपने लिये कष्टकारक बना लेता है। अतः आवश्यक है कि किसी पूर्ण पुरुष का सहारा ले और सत्संग से उस शक्ति का सदुपयोग सीख।"

एक बात और ध्यान देने योग्य है कि तुम अपने कर्त्ता आप हो लेकिन दूसरों के नहीं। प्रत्येक पुरुष की यही दशा है। इसलिये सुख शान्ति के जिज्ञासुओं के लिए घरेलू राष्ट्रीय, और सामाजिक जीवन में समान (एकसी) इच्छा और समान ख्याल की बड़ी आवश्यकता

है। राय साहब ज्ञानसिंह ! वेदों का एक मंत्र सुनाया करते हैं। जिस का अर्थ है कि एक ख्याल के होकर रहो। इकट्ठे चलो आदि आदि इसलिये घरेलू जीवन में सबका समान ख्याल या एक सम्मति हो इसका मैं मानने वाला हूँ। अधिक स्पष्ट रूप में यों समझ लो कि जब तक घरेलू जीवन में स्त्री पुरुष और परिवार में एक सम्मति नहीं होगी, दुनिया का जीवन कदापि सुखदायक नहीं हो सकता। सांसारिक शारीरिक और मानमिक सुख शान्ति के लिये समान विचारधारा (हम ख्यालों) की आवश्यकता है। इसी प्रकार देश की शान्ति के लिये इत्तफाक (सहमति) की आवश्यकता है। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को अपने काम से काम रखना चाहिये। छोटे-छोटे मण्डल इकट्ठे होकर बड़ा मण्डल बन जाता है।

इस सफलता का एक मात्र साधन सुमिरन ध्यान और भजन है। अपनी इच्छा या वासना को याद करते रहो यह सुमिरन है। उसका रूप बनाओ यह ध्यान है। लगातार ध्यान से उसमें लय हो जाओ यह भजन है। सत्संगी (शब्द योगाभ्यासी) कहेंगे कि भजन तो अनहद शब्द के सुनने का नाम है। यह ठीक है मगर उसके लिए भी प्रवल इच्छा और दिल की एकाग्रता की आवश्यकता है।

याद रक्खो ! हर प्रकार की वासना या इच्छा एक प्रकार का सूक्ष्म माद्दा है या सूक्ष्म प्रकृति हैं। मेरी 'मनुष्य बनो' व उन्नति मार्ग' नामी पुस्तकों को पढ़िये। उनमें इसका पूर्ण विवरण दिया गया है। चूँकि माद्दा या प्रकृति हर समय हरकत या गति में रहता है और हरकत से शब्द और प्रकाश प्राकट्य (इज़्हार) होता है, इसलिए यदि सौभाग्य से वासना के दौरान में वृत्ति अंतर में ठहर जाय तो उससे जो शब्द प्रगट होगा वह उस व्यक्ति की इच्छा या वासना की प्रकृति का होगा। उसके सुनने से सफलता अति शीघ्र होगी। इसलिये संतों ने सहसदल के भिन्न भिन्न प्रकार के शब्दों

का जिक्र किया है। यहाँ आरती होती है। आरती में घंटा शंख आदि बजते हैं।

यह शब्द भिन्न २ प्रकार की उचित और अनुचित वासनाओं के होते हैं जो कि प्रकृति हैं। फिर सुनलो! जिस इच्छा या वासना को लेकर मनुष्य अपने अन्तर में ठहरेगा उस बासना की प्रकृति के शब्द को सुनेगा और अवश्य सफल होगा। यदि उस इच्छा में किसी की बुराई घृणा, द्वेष, ईर्षा या अनुचित लालच बगैरह भरा हुआ है तो सफलता के साथ नतीजा दुःख और कष्ट दायक होगा। इसलिये आवश्यक है कि मनुष्य अपनी इच्छाओं को किसी पूर्ण पुरुष के आदेशानुसार रक्खे। वह तुम्हारी परिस्थिति और विचार-धारा के अनुसार तरकीब बतादेगा।

साधारणतया लोग दो २ ३ घण्टे अभ्यास में बैठते हैं और शिकायत करते हैं कि उनको वह अन्रूनी शब्द जो पुस्तकों में बताये गये हैं या सत्संग मे प्रगट किये जाते हैं सुनाई नहीं देते ' इसमें उनकी समझ का दोष है। चूँकि शब्द प्रकृति से पैदा होता है इसलिये जब तक उनकी आंतरिक इच्छा का जोर न होगा या वासना प्रवल न होगी मनुष्य को पुस्तकों में बताये हुये शब्द सुनाई न देंगे। अतः यह जरूरी है कि पहले मनुष्य अपनी वासना को तीव्र करे। फिर अन्द-रूनी शब्द, जो वासना की प्रकृति से पैदा होगा सुनाई देगा। मुझे अफसोस है कि मैं इस भेद को ज्यों का त्यों शब्दों में प्रगट नहीं कर सकता। जिज्ञासू सज्जनों को ज़बानी तौर पर बहतर तरीके से समझा दूगाँ।

सवाल—यदि कोई व्यक्ति इन स्थानों का अन्दरूनी अनहद शब्द न सुन सके तो क्या उस रूरत में भी बासना पूर्ण होना सम्भव है।

उत्तर—सुनो! त्रिकुटी का स्थान गुरु का स्थान है। ओंकार का स्थान है। यह ओंकार तमाम रचना में व्यापक है और यह केवल प्रकृति की रचना की समझ है। सृष्टि का स्थान पूर्वक

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

अध्ययन करोगे तो तुमको इसका पता लग जायगा। यद्यपि साँप टाँगें नहीं होती मगर उसकी पसलियाँ ही ऐसी तरकीब से बनाई गई हैं कि वह भली-भाँति दौड़ सकता है। ऊँट का यदि क़द लम्बा है तो उसकी गरदन भी लम्बी बनाई गई है। इस उसूल का जो रचना में काम करता है नाम गुरु, ज्ञान या ओउम् है। यह ओउम् या उसूल या कानूने कुदरत स्थूल रचना में व्यापक है। इसलिये जिस मनुष्य को किसी वासना की पूर्ति की लालसा है उसके लिये जरूरी है कि अन्तर में एकाग्रता प्राप्त करे। फिर स्वयं ओंकार या ओ३म् मनुष्य के अन्दर समझ विवेक व नित्य प्रति नई २ उपज देता रहेगा हाँ यदि इस भेद के ज्ञाता का सहारा मिल जाय तो सफलता जल्द और अवश्य होती है। मेरा विचार तो यह है कि प्रत्येक इच्छा के प्रभाव से उसकी पूर्ति के समान कुदरत में पैदा होते रहतेहैं।

काम रूक सकता नहीं ऐ दिले नादाँ कोई।
खुदबखुद गैब से हो जायगा सामां कोई।।

त्रिकुटी क्या है ? ध्याता, ध्येय और ध्यान; प्रेम का आदर्श (प्रेम पात्र) और प्रेम, या इच्छुक इच्छित वस्तु और इच्छा। यही उसूल पारमार्थिक या रुहानी जिन्दगी में काम करता है। आत्मिक (रुहानी) जीवन के लिये भी पहले त्रिकुटी में आना अनिवार्य है। यह ओंकार, ज्ञान या समझ जो गुरु का रूप है प्रवृत्ति और निवृत्ति मार्ग दोनों में सहायता करता है। यही कारण है कि वेदों और अन्य प्राचीन ग्रंथों में ओउम् की महिमा वर्णन की गई है हर बात लिखने से पहले ओइम् शब्द लिखा जाता है हर काम में पहले ओइम् का सहारा लिया जाता है। रिवाज मौजूद है मगर उसूल का ज्ञान नहीं है।

योग साधन या अन्तरीय चढ़ाई के लिये साधक को शब्द और नूर (प्रकाश) दोनों की आवश्यकता है बिना शब्द और प्रकाश के

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

भी मनुष्य मस्ती या आनन्द की अवस्था तक जा सकता है मगर वहां थिरताई नहीं रहती और न वह इष्ट पद है। यही कारण है कि संतों ने कलियुग में जीवों की कमजोर प्रकृति का ध्यान रखते हुये अमली दृष्टि से शब्द योग की तालीम दी है ताकि शारीरिक मानसिक और आत्मिक सुधार जल्द हो सके। आवश्यकता केवल इस बात की है कि मनुष्य किसी पूर्ण और मर्मज्ञ पुरुष का सत्संग करे ताकि सही आदेश (guidence) ले सके। इस प्रकार से सफलता जल्द और सहूलियत से प्राप्त हो जाती है।

प्रश्न –साधारण रूप से देखने में आता है कि प्रय: नामधारी लोग दुखी दिखाई देते हैं। उनका घरेलू सांसारिक और मानसिक जीवन दयनीय होता है। इसका क्या कारण है ?

उत्तर—प्रथम तो किसी व्यक्ति की बाबत केवल बाह्य दशा से कोई राय कायम नहीं की जा सकी। प्रत्येक व्यक्ति अपनी दशा स्वयं भली प्रकार जानता है। फिर भी जिनको शिकायत है समझ लो कि वह निगुरे हैं। गुरू धारण करने का वह अभिप्राय कदापि नहीं है कि तुम मान लेते हो कि मेरा गुरु अमुक है। वास्तव में गुरु धारण करने का अभिप्राय है वह ज्ञान, समझ, गुरु या तरीका प्राप्त करना है जो जीवों को आनन्दमय बनादे। यदि किसी को कोई पूर्ण पुरुष मिल जाय और जिज्ञासू उसकी सेवा और सत्संग से सार भेद को प्राप्त करले और उसके अनुसार अमली जिन्दगी में आ जाय तो सफलता शर्तिया और अवश्य होगी। वह भेद जो मैंने समझा है उसे बताता हूँ।

न दावा है कोई मुझे, मैं अपना तजरुवा कहता हूँ।
दावा करने वाला नादाँ है, यह मैं सत कहता हूँ ॥

एक इष्ट बनाओ उसमें पूर्णता मानो। दूसरे शब्दों में इष्ट को जीवन की पूरी सामिग्री देने वाला समझो। उसका कोई नाम रक्खो

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

कोई रूप बनाकर अपने दिल में बिठाओ और उसके ध्यान में रहने का प्रयत्न करते रहो। तुम्हारी हर प्रकार की वासनाएँ स्वयं पूर्ण होती रहेगीं। जैसे २ ध्यान या वासना में पक्कापन होता जायगा जीवन आनन्ददायक, सुखदायक और शान्तिमय होता जायगा। खास-खास स्थानों (चक्रों) पर एकाग्रता प्राप्त करने से वहां की दशा का उत्तर तुम्हारे शरीर में होता रहेगा और तुम जीवन को सफल समझने लगोगे।

प्रश्न—क्षमा कीजिये। आप इस बुढ़ापे में मजदूरी करते हैं पैंसठ या अस्सी रुपये से कैसे गुजारा चल सकता है। आपके पास आने जाने वालों का भी खर्च है। यदि आपका उसूल सच्चा है तो इसके आमिल (आचरणीय) होते हुए आप स्वयं धनी क्यो नहीं बन जाते क्या आप पर यह कहावत लागू नहीं होती कि "खुदरा फजीहत दीगरा नसीहत।"

उत्तर—आपकी निर्भयता और सच्चाई के लिये धन्यवाद ! 'सुनो' अर्सा हुआ कि लाहौर में दातादयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी की पुत्री चुनमुनदेवी (जिनके पति श्री गौरीशंकर लाल अखतर थे) का स्वर्गवास हो गया। मैं उस समय वहीं था। सत्संग हो रहा था। दातादयाल ने कहा फकीर ! मैं बचपन मैं पारमार्थिक यारूहानी उन्नति का अभिलाषी था। पुस्तकों के अध्ययन से यह ख्याल मिला था कि यदि अपना कोई न हो और सांसारिक बन्धनों से छुटकारा मिल जाय तो मनुष्य जल्द निर्वाण को प्राप्त कर लेता है। इस ख्याल का असर पड़ा और आज लड़की भी चल बसी। मेरे पास श्री गोरीशंकरलाल भी बैठे थे। हम दोनों बराबर उम्र के थे, उन्होंने भी मुझसे कितनी बार कहा था कि अगर स्त्री न हो तो हम परमार्थ में लगें। दातादयाल की बात को सुनकर मैंने उनका ख्याल भी वहाँ प्रगट कर दिया। इस पर श्री गौरीशंकर लाल ने मेरी पीठ पर घूंसा मारा कि ऐसा क्यों कहा अब भेद को समझो।

मुझे भी बचपन से फकीरी का ख्याल था, धन और मान की इच्छा न थी। आठ बरस की उम्र में फकीरी के लिए घर से बाहर निकल पड़ा। पिताजी नौ मील से पकड़ कर वापिस लाये थे। जब दाता दयाल की शरण में पहुँचा तो उनको शिक्षा के संस्कार के कारण मेरा रूझान दुनियाँ की ओर रहा। सारी जिंदगी अपनी कमाई की बचत को दातादयाल के नाम धाम में भेजता रहा। श्री नंदूभाई ने दातादयाल की आज्ञा से मेरा सब रुपया मेरे नाम से बैंक में जमा कराया हुआ था। उस समय मुझको इस बात का इल्म न था। उन्होंने कुल रुपया मेरी स्त्री को दे दिया और मुझे हुक्म दिया कि बाबले अपना कमाओ और अपना खाओ। मेरी स्त्री को आज्ञा दी कि इस रुपये में से एक पैसा भी फकीर को न देना। संत सतगुरु रेख में मेख मारते हैं। उन्होंने मेरे कर्म को बदला! मैंने कभी धनवान बनने की इच्छा नही की इसलिये निर्धन रहा।

याद रक्खो! प्रत्येक पुरुष की प्रकृति भिन्न है जैसा जिसका ख्याल वैसा उसका हाल। हाँ! मेरी यह कोशिश अवश्य रही है कि किसी के सामने हाथ फैलाना न पड़े और न मुँहताज बनकर रहना पडे। चुनाचे आज दिन तक दाता ने मेरी लाज रक्खी हैं और निश्चय है कि बात रह जायगी। मेरा लड़का इन्जिनियरिंग में पढ़ना चाहता था। चूँकि मेरे पास इतना पैसा नहीं था मैंने इन्कार कर दिया। उसने इस विषय में मेरे भाई को लिखा और उन्होंने उसकी मदद की और कर रहे हैं। मैं आज निर्धन हूँ तो इस कारण से हूँ कि यह मेरी वासना का परिणाम है, या मेरे कर्म का फल है। यथार्थ में मेरी इच्छा उस सार तत्व को जानने या सत पद की प्राप्ति की थी और वह पूरी हो गई। इस प्रकार के तजुर्बों के आधार पर मैंने अपने ख्यालात में सचाई पाकर उनको प्रगट करने का साहस किया है। जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति।

प्रश्न—क्या यह गलत है कि जैसे जिसके पहले कर्म होते हैं वह

वैसा ही बन जाता है।

उत्तर – गलत नहीं, ठीक है मगर यह तालीम हानिकारक है।

तदबीर इन्साँ तक़दीर इन्साँ, के मातहत है दोस्तो।
मगर ऐसा कहना और समझना है जुर्म कबीर दोस्तो।'
इंसां को बना देता है ऐसा ख्याल मुर्दा दिल।
बूढ़ों के लिए अच्छा है बेशक़ यह ख्याल॥

युवकों, बच्चों और गृहस्थी जीवों के लिए यह तक़दीर की तालीम भयंकर है। उनको त्याग और वैराग्य की शिक्षा को आवश्यकता नहीं हैं।

श्री रामचन्द्रजी ब्रह्म के अवतार थे। संसार से वैराग्य उत्पन्न होने पर गुरु वशिष्ठ के पास गये और अपने विचार प्रगट किये। उनकी सब बातें सुनकर गुरु ने कहा–

ऐ राम! दैव २ आलसी पुकारा करते हैं। (देखो योग वशिष्ठ) वशिष्ठ जी के शब्दों ने राम से वह काम कराया कि जब तक भारत वर्ष कायम है उनकी याद लोगों के दिलों में नया जीवन फूँकती रहेगी। मित्रो! साहस और दृढ़ता से काम लेकर इस संसार में आनन्द और फारिगुल बाली का जीवन बिताओ। आसूदगी (संपन्नता) के विचार रखने का प्रयत्न करो। यह यत्न यही है कि सहसदल कंबल और त्रिकुटी में डेरा डालकर संसार का काम करो हाँ जिनकी प्रकृति दूसरे ढ़ंग की है और दुनिया का काफी अनुभव हो गया है, उनको आगे की मंजिलों (शब्द योग के स्थान) की ओर ध्यान देना चाहिये जिनका जिक्र प्राणायाम में मौजूद है। मगर उनको भी इन दर्जों से गुजर कर जाना होगा बच्चों और युवकों को ऊँचो शिक्षा (ऊँचे स्थानों का साधन) हानिकारक सावित होगा। आजकल भेड़िये धसान चाल सत्संगियों में चलो जा रही है। नौजवान लड़के और लड़कियों को नाम दे दिया जाता है और त्याग व वैराग्य का सबक़ पढ़ाया जाता है। इससे उनका साँसारिक जीवन

किसी सूरत में बहतर नहीं हो सकता उनको केवल गायत्री मंत्र अर्थात सुमिरन और ध्यान का उसूल ही बताना पर्याप्त है वर्ना याद रहे कि धोबी का कुत्ता घर का न घाट का वाली कहावत लागू हो जायगी। अपने अनुभव की पुष्टि के लिये दातादयाल के समय के दो उदाहरण देता हूँ।

(१) श्री हरीप्रकाश गुप्ता जो श्री रघुनाथ सहाय गुप्ता के लड़के हैं मैट्रिक में पढ़ते थे। उनके पिता के कहने पर दाता ने लड़के को नाम दे दिया। दो दिन के अभ्यास के बाद उसने कहा कि अब और अभ्यास न करना। शिक्षा प्राप्त करो। विवाह करो। संतान उत्पन्न करो। फिर पिछली उम्र में अभ्यास की ओर ध्यान देना।

(२) मेरे छोटे भाई राय साहिब सुरेन्द्रनाथ मेरी देखा देखी छोटी उम्र में सत्संगी हुये थे। दातादयाल ने कहा कि आओ तुमको नाम की महिमा बता दूँ। उन्होंने एक कागज पर लिखा For Surendra,

"Life means work and work means life.

(सुरेन्द्र के लिये – जीवन ही काम है और काम ही जीवन है।) काम करो। अन्तिम अवस्था में तुम राधास्वामी दयाल की गोद में जाओगे। इसलिये मैं कहता हूँ कि पुस्तकीय ज्ञान ठीक है मगर वह पूर्ण गुरु के सत्संग द्वारा ही समझा जा सकता है। आजकल पुस्तकों का तूफान आया हुआ है। बिना गुरु का दामन पकड़े केवल पुस्तकों के अध्ययन से मनुष्य गलती कर जाता है। मैंने निज अनुभव के आधार पर 'मनुष्य बनो' की आवाज उठाई है। हर काम सोच समझ कर प्राकृतिक नियम के अनुसार करो। गलत रास्ता अख्तयार न करो। फिर कहता हूं गुरु परायण बनो।

गुरु मता धारण करो, इस बिन नहिं कल्याण।
गुरु बिन नहिं धन धाम है, शक्ति मुक्ति सतज्ञान॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ताते सबको चाहिये, ढ़ूढे कोई कामिल इन्सान।
जो गुरु आज्ञा बरतते, वे हैं चतुर सुजान॥
जीवन के आदेश को समझकर, करो अपना कल्याण।
एक ही लाठी में मत हांको, कुत्ता गधा और इन्सान॥
बाणी पढ़ पढ़ भरम में भूले, अरु पाया दुख महान।
बिन जीवित कामिल पुरुष के कभी न मिटता है अज्ञान॥
जीवों के हित प्रकट हुआ हूँ, बन कर कामिल इन्सान।
अगर्चे तुम अहंकारी समझ कर कहोगे मुझको नादान॥
इसलिए गद्दी पति नहिं बना, न बनाया कोइ धाम स्थान।
मान धन दौलत की आस से, रहता हूँ अलगान॥
जीवों के हित के लिये धारा भेष फ़कीर।
ताकि प्रकट कर जाऊँ, सत पुरुषों का असली ज्ञान॥
चेला काहू बनाऊँ नही, न हूं मैं कोई आचारज।
भाई तुम्हारा बनकर के, करता निज बीती का बयान॥
कुछ दिन यह शरीर है कायम, दरवाजा है खोल दिया।
सत्संग करो अगर जो चाहे तो, पाओ निर्मल ज्ञान॥
राज को पाकर खुद जीओ, और औरों को जीने दो।
ताकि हो जाये फिर मनुष्य जाति का सही कल्याण॥

—+—

शब्द

दुर्गा दास "चमन"

रे साधो यह जग रेन बसेरा।
१–दुःख सुख दोनों आते सब पर जगत का ब्यौहार।
दुःख में रोना सुख में हसनाँ यह है कुल संसार॥
इन दोनों ने बुरी तरह से हम सब को है घेरा
रे साधो यह जग रैन बसेरा।

२-दुख और सुख में बन कर साथी सेवा भाव दिखावा।
बिन स्वार्थ के धर्म निभाए वह मानव कहलाए।।
मानवता को वह नहीं समझा, करे जो मेरा मेरा।
रे साधो यह जग रैन बसेरा।
३-सुखऔर दुख से दूर रहे जो वह सतगुरु का प्यारा।
दृष्टापन से मन को देखे वह है गुरु हमारा।
सन्त पने में सत को देखे, रखे सत में जेरा।
रे साधो! यह जग रैन बसेरा।

—+—

किश्त पाँचवीं

फकीर "चमन" पत्रावली

हुशियारपुर
१५-१-७३

१६- दुर्गा दास चमन जी राधास्वामी

पत्र मिला। विश्वास रखो। विश्वाश बहुत काम करता है। सिम्रण, ध्यान करते रहा करो मेरी शुभ भावनाएँ आपके साथ हैं।

आपका फकीर
हुशियारपुर
३१-१-७३

२०- दुर्गादास चमन जी राधास्वामी

पत्र मिला। मैं सच्चे मन से चाहता हूँ कि कुदरत ने जिस काम के लिये तुम्हें बनाया है तुम वह काम पूरा कर जाओ।

आपका फकीर
हुशियारपुर
८-२-७३

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

२१- श्री दुर्गा दास चमन

पत्र मिला। आज आप को पुस्तकें भेज दी हैं। जो काम करो मौज के सहारे पर करो। अपने मन में सच्चे रहो। जाती मान इज्जत और धन का विचार न रहे। जो तुम्हारे कर्म में है वह तुमको मिल जाना है। दाता तेरी सँभाल करेगा। सत संगियों से अपनी जात्त के लिये कुछ मत लिया करो।

आपका फकीर
हुशियारपुर
२७-३-७३

२२- प्यारे चमन जी

राधास्वामी

पत्र मिला। जल्दी करने की कोई जरूरत नहीं समय पर सारा काम हो जायगा। बैसाखी के सत्संग का इश्तहार आप को पहले भेज चुके हैं-१३, १४, अप्रैल को चार सत्संग होंगे।

बाकी सब ठीक है
आपका फकीर

—+

वार्षिक सत्संग मानव कल्याण सभा चंडीगढ़

तिथि २१-११-१९८२

राधास्वामी हजूर परम संत परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज जून १९८१ में अमरीका जाने से पहले चंडीगढ़ पधारे और उन्होंने यहां मानव कल्याण सभा स्थापित की। इस सिलसिले में अब सभा की तरफ से एक विज्ञापन निकला जिस में लिखा हुआ था कि यह पहला वार्षिक सत्संग है जो कि परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज के जन्म दिन पर मनाया जा रहा है। मेरे पास एक दो व्यक्ति आए। उन्होंने मुझसे पूछा कि बाबा फकीर चन्द जी महाराज सारी उमर संसारी लोगों को यह बताते रहे कि गुरु न पैदा होता है न मरता है। यह जो लोग गुरुओं के जन्म या मरण मनाते हैं, एक

तो उनको गुरु के असली रूप की समझ नहीं होती दूसरे वह गुरु के नाम उस की बाहरी शकल को और उसकी शिक्षा को एक विशेष धर्म पंथ या फिरका बनाकर उनके प्रचार के लिए या अपनी मान बढ़ाई गुरुवाई या गद्दी के लिए प्रयोग करते हैं। नतीजा यह होता है इन्सानी नसल बट जाती है और लड़ाइयाँ झगड़े फसाद पैदा होते हैं तो इन व्यक्तियों ने मुझे कहा कि आपका नाम विज्ञापन में हैं। आप १८ वर्ष हजूर परम दयाल जी महाराज को संगत में रहे। आपने क्या समझा ? क्या यह उनकी सच्ची शिक्षा है। उनका प्रश्न उनके लिए उचित था। मैंने उनसे बिनती की कि परम दयाल जी महाराज ने इस सभा का नाम मानव कल्याण सभा रखा और उनके जीवन के अनुभव में और मेरी तुच्छ बुद्धि में भी यही आया कि यदि इस संसार में मानव जाति का कल्याण हो सकता है तो केवल गुरु मत या संत-मत को समझ हासिल करने से हो सकता है और कई उपाय नजर नहीं आता। समय समय पर गुरु आते हैं और सन्तमत को शिक्षा दे जाते हैं या उस शिक्षा में समय के अनुसार परिवर्तन कर जाते हैं। जो तबदीली कर जाते हैं। उनको सन्त सत्गुरु वक्त कहा जाता जाता है। वह कभी कभी आते हैं और सन्त सत्गुरु वक्त कहलाते हैं। हजूर परप दयाल जो महाराज कहा करते थे कि मैं कबीर, नानक और राधास्वामी दयाल हूँ। इसका अर्थ यह नहीं कि मैं वो हूँ जो वो इन्सानी शकल में थे किन्तु मैं इस वक्त उनकी शिक्षा का अलमबरदार हूँ। तो संसार के भले के लिये सन्त मत की सच्चाई को सन्त साफ कर जाते हैं। यह मानव कल्याण सभा हजूर परम दयाल जी महाराज के जन्म दिन के सिलसिले में हर साल सत्संग रखा करेगी। क्या बताने के लिये ? कि कोई सन्त सत्गुरु वक्त आया था यह बता गया कि गुरु ज्ञान और अनुभव का नाम है। वह न कभी पैदा होता है न मरता है। यह सभा उनके नाम पर कोई अलग धर्म पंथ नहीं चलायगी जिससे इन्सानी नसल

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

और बट जाए। और जिस वजह से आगे बटी हुई है और लड़ा फसाद करके अशान्ति पैदा हो रही है उसका मूल कारण बतायगो कि यह गुरु मत की असलियत न समझते हुए और गुरु का असली रूप बताने की कोशिश किया करेगो जो जन्म मरण से दुरी है या खुले शब्दों में हजूर बाबा फकीर चन्द जी महाराज का जन्म दिन वार्षिक सत्संग के रूप में मनाया जाया करेगा यह सच्चाई बताने के लिये कि गुरु न मरता है न जन्मता है।

इस दास ने उनकी १८ साल संगत की है। जो समझ में आया वो बताना चाहता हू। कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैं ने समझा यही ठीक है। सबसे पहले मेरी अपनी ही आत्मा अपने आप से सवाल करती है कि क्या तुमने गुरु के रूप को समझा है ? नहीं। केवल पच्चास साठ प्रतिशत अभी तक समझ में आया है। अभी मैं अधूरा हूँ। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ ? जब हजूर परम दयाल जी महाराज ने अपनी दया करके गुरु का रूप दिखाया उस समय जो मेरे साथ बीती वो तो मैं जानता हूँ किन्तु गुरु का रूप दर्शाते समय आदमी को यह समझ आ जाती है उस वक्त इन्सान पूर्ण रूप से गुरु के रूप को समझ जाता है। स्वयं उसको धारण किये हुए जीवन के दिन काटता है और दूसरों को बताने का हक रखता है। तो यह बताने के लिए कि गुरु क्या है और गुरु का असली रूप क्या है, मैं आपकी सेवा में अपने जीवन का कच्चा चिट्ठा रखने का साहस हूँ। १९६३ में जब मैं बमुकाम टोहना जिला हिसार जो इस वक्त हरियाणा प्रान्त में है ऐस.डो ओ (बी एण्ड आर) था। तो एक दिन मैं ने एस डी एम फतेहाबाद के दफ्तर में जहाँ तमाम महकमों के गज़टिड अफसरों की मीटिंग थी जाना था मैं अपनी जीप पर सवार होकर चला। जब उकलाना नगर के स्थान पर पहुंचा तो मेरी जीप का टायर फट गया। मैंने अपने ड्राइवर से कहा कि दूसरा टायर बदल दो उसने कहा कि दूसरा टायर भी मरम्मत के लिये दिया हुआहै। अन्त में विवशतः मुझे लारी पर

चढ़ना पड़ा ताकि मैं समय पर मीटिंग में पहुँच जाऊँ। उस लारी में कुछ भगत लोग बैठे हुये थे। वो आपस में आत्मा परमात्मा जन्म मरण और सन्त मत की बातें कर रहे थे। उनमें से एक ने कहा कि इस समय संसार भर में यदि कोई पूरा गुरु है जो हमें परमार्थ या जन्म मरण से निकालने की सच्ची शिक्षा दे सकता है तो वो हुशियारपुर शहर में पंडित फकीर चन्द जो हैं। यह सुनकर मैं बहुत हैरान हुआ क्यों कि उसने सारे संसार का नाम लिया।

मैंने उनसे प्रार्थना की कि भाई साहब क्या आप मुझे उनका पता लिखा सकते हैं। तो उसने १८ रेलवे मंडी होशियारपुर का पता दिया। उस समय मन्दिर अभी पूरा नहीं बना था किन्तु जमीन लेकर एक हाल की तैयारी आरम्भ थी। उस व्यक्ति ने मुझे यह भी बताया कि उनके बचन इन्सान बनो रसाले में जो अलीगढ़ से निकलता है, छपते हैं। मैंने वो पता भी लिख लिया। शाम को जब घर आया तो एक पत्र हजूर परम दयाल जी महाराज की सेवा में लिखा और दूसरा पत्र विश्व प्रेमी श्री मुन्शीलाल जी गोयल जो उस वक्त इन्सान बनो रसाले के एडीटर थे, उनको लिखा।

चार पाँच दिन के बाद हजूर परम दयाल जी महाराज का उत्तर आया कि तेरे लिये केवल सत्संग है। पत्र से ऐसा ज्ञात पड़ता था जैसे वत मुझे पहले से ही जानते थे। फिर लिखा कि यहाँ हर मास जेठे इतवार को सत्संग होता है। यदि तुम चाहो तो आ सकते उस समय मेरे दिल में विचार आया कि भई सत्संग तो बहुत सुने हैं। शान्ति नही मिली। अच्छा चलकर देखें कि सत्संग से क्या बनता है। कुछ दिनों के बाद इन्सान बनो पत्रिका भी आ गई उसमें महाराज जी के वचन छपे हुये थे मैंने जब बो पढ़े तो मुझे वो वचन अजीव से लगे जो मैंने आगे नहीं पढ़े और सुने थे। उन वचनों का पढ़कर मेरे दिल में और भी चाह बढ़ी कि मैं उनके सत्संग में जाऊँ मैं पहले ही जेठे इतवार को होशियारपुर पहुँचा। उस समय वो सत्संग करा रहे थे और साथ साथ हुक्का भो पोते थे जो मुझे अच्छा

न लगा किन्तु मैं पीछे बैठकर सत्संग के बचन सुनता रहा। इसी बीच उन्होंने कहा कि गुरु या सतगुरु फकीरचन्द का नाम नहीं। जो व्यक्ति फकीर चंद सुपुत्र पंडित मस्तराम को गुरु मानेगा उसका कभी भी कल्याण नहीं हो सकता। नहीं हो सकता। नहीं हो सकता उन्होंने अपने सत्संग में हजूर दाता दयाल महर्षि शिव व्रत लाल जो महाराज का एक शब्द भी पढ़ा:—

"गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी
गुरु को मानुष जानकर, भक्ति का करें ब्यौहार।
सो प्रानी अति मूढ़ हैं, कैसे जाँय भव पार। देह के बने अभिमानी ...
गुरु को मानुष जानकर, शीत प्रसादी ले।
सो तो पशु समान हैं, संशय में अटके। गुरु तत्व न जानी—....
गुरु को मानुष जानकर, मानष करो विचार।
सो नर मुढ़ गवार है, भूल रहे संसार। मोह के फाँस फसानी ....
गुरु को मानुष जानकर, भेड़ की चलते चाल।
वह बन्धन को क्यों तजें, ब्यापे माया काल। पड़े योनि की खानी....
गुरु नाम आदर्श का, गुरु है मन का इष्ट।
इष्ट आदर्श को न लखे, समझो उसे कनिष्ठ। बात बूझे मन मानी
गुरु भाव घट में रहे, अघट सुघट की खान।
जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ़ समान। नहीं गुरु रूप पिछानी....
चेला तो चित में रहे, गुरु चित के आकाश।
अपने में दोनों लखे, वही गुरु का दास। रहे गुरु पद घट ठानी....
सुरत शिष्य गुरु शब्द है, शब्द गुरु का रूप।
शब्द गुरु की परख बिन, डूबे भरम के कूप। नर जन्म गंवानी ...
गुरु ज्ञान का तत्व है, गुरु ज्ञान का सार।
गुरु मत गुरु गम लखे, फिर नहीं भव भार। कमल जैसी गति आनी
राधास्वामी सतगुरु सन्त ने कही बात समझाय।
जो नहीं माने बचन को उरझ उरझ उरझाए, कौन समझे यह बानी

यह सुनकर मेरी बुद्धि चकित रह गुई। अन्त में उन्होंने यह भी कहा कि मानवता मन्दिर की मैं नई दुकान खोल रहा हूँ। यदि ने वही काम करना होता जो संत कर गये या इस वक्त के विभिन्न स्थानों पर काम कर रहे हैं तो मुझे नई दुकान खोलने की जरूरत नहीं थी। मैंने तो पढ़ा हुआ था कि मब कुछ गुरु ही है और क्यों कि मेरे पहले सत्गुरु बावा सत करतार जो चोला १९४० में छूट गया था और मैं अपनी नौकरी से निवृत होने वाला था इसलिए गुरु की तलाश थी। मैं हैरान हुआ कि मैं तो इनको गुरु करने आया था और यह फरमाते हैं कि फकीर चन्द गुरु नहीं है। क्यों कि मुझे इन बचनों में सच्चाई नजर आती थी इसलिये प्रकृति मुझे धकेल कर उनके चरणों में ले गई और पेनशन प्राप्त कर लेने के बाद मानवता मन्दिर में मकान भी अपना बना कर खाने पीने का अपना ही बन्दो बस्त करके वहाँ १८ वर्ष तक उनके सत्संग सुने उनके दर्शन करता रहा उनके बचन सुनता रहा और जो आज्ञा होती उसका पालन करता रहा। यह भी सब काम मौज का था।

वह प्रातः अपने रिक्शा पर चढकर अपने घर १८ रेलवे मंडी से मानवता मन्दिर पधारा करते थे। रात को मन्दिर में नही रहा करते थे। यदि किसी कारण वश ठहरना पड़े तो किराया देते थे। मैं उनकी ओर देखता रहता था वो हाल के बरामदे में जूता उतारते थे। दरवाजे के अन्दर दाखिल होकर दोनों हाथ जोड़ लेते थे और आँखें बन्द कर लेते थे और धीरे धीरे दाता दयाल जी महाराज की समाध के सामने झुककर दोनों हाथ चबूतरे पर टिका कर सिर नवा कर माथा टेकते थे यानी अपने शरीर के द्वारा हजूर दाता दयाल जी महाराज की मूर्ति को तो माथा टेकते थे किन्तु आंखें बंद रखते थे। यह भी मेरे नियम के विरूद्ध था। मैं किसी मंदिर में जाता तो पहले भगवान कीमूर्ति को बड़े ध्यान से देखता और उस शकल को अपने मस्तक पर बनाता था और फिर मस्तो में परिक्रमा करता था

क्यों कि भगवान की मूर्ति को देखने से कुछ एकाग्रत आ जाती थी तो उस वक्त मैंने अपने दिल में यह समझा कि ये हजूर दाता दयाल की शकल अपने अन्दर नहीं बनाते किन्तु अपने अन्दर आँखें बन्द करके दाता दयाल के असली रूप को देखते होंगे या किसी और हालत में चले जाते होंगे। समय बीतता गया। उनकी संगत से मैंने जो कुछ समझा वो आज आप लोगों के चरण कमलों में संतों की बानियों के आधार पर रखता हूँ। पहले राधास्वामी दयाल का एक शब्द जो सात बचन में लिखा है, वो सुनिये:-

"गुरु मोहे अपना रूप दिखाओ
यह तो रुप धरा तुम सरगुन जीव उबार कराओ"

इस शब्द में स्वामी जी महाराज देह धारी गुरु और गुरु के असली रूप को अलग अलग करके दर्शाने की कोशिश कर रहे हैं गुरु को सम्बोधित कर रहे हैं जिसका रूप आँखों के द्वारा अपने सामने देख रहे हैं और साथ ही प्रार्थना कर रहे कि मुझे अपना असली रूप दिखाओ। यह रूप जो मैं देख रहा हूँ यह तो सरगुन तीन गुनों सत रज, तम से बना है और इसमें गति (हरकत) है। इसके द्वारा ही जीवों का उभार हो सकता है अर्थात बिना इस शरीर के आप उस सत्गुरु जो कि आपने अन्तर धारण किया हुआ है, जीवों को दिखाई कर या जीवों के अन्दर उसका संचार करके उनका उभार नहीं कर सकते। उनको इस शरीर को रखते हुए अपने असली रूप का पता देते हैं। दाता दयाल जी महाराज ने भी अपने शब्द में यही बात समझा है कि गुरु का असली रूप तो ज्ञान का तत्व है मानुष रूप नहीं। यह गुरु मत है। यह इसलिऐ संसार में गुरु के असली रूप को समझाने के लिए आई। जिसने इस को समझ लिया शान्त हो गया। जिन्होंने न समझा इसका अनुचित लाभ उठाते हैं। दुनियाँ में झगड़े खड़े कर लिये हैं। कई धर्म पंथ सम्प्रदाय बना लिए। अपनी अलग धर्म पुस्तकें बना लीं, ग्रंथ बना लिए देश सूबे बन गये जिस का परिणाम

इस वक्त दुनिया के लोग भोग रहे हैं हजूर परम दयाल जी महाराज संसार के लोगों को चेतावनी दे गये और इन्सान बनो की आवज उठाई। यदि सन्त मत को न समझा गया और सभी इन्सान मिल जुल कर न रहे एक दूसरे के विरूद्ध इर्ष्या द्वेष रहा तो दुनिया में मुसीबतें आएंगी। मुसीबतें उठाकर फिर लोग इस गुरु मत की ओर ओर आएंगे समझेंगे या विश्वास कर लेंगे तो दुनिया में शान्ति का राज आयेगा।

"रूप तुम्हारा अगम अपारा, सोई अब दरसाओ।
देखूं रुप मगन होय बैठूं, अभय दान दिलवाओ।"

आपका असली रुप समझ की पहुँच से परे है ? जिस का वार पार नहीं जब बाहर सतगुरु अपना रुप दिखा देता है तो वो आदमी एक तो मगन हो जाता है अर्थात अपने ही रुप के प्रेम में डूबा रहता है। दिमाग के अन्तर गुरु की दया से एक ऐसी हालत या खुमारी चढ़ी रहती है जिस हालत को स्वामी जी महाराज "मगन होय बैठूं" कह रहे हैं। दूसरे वह व्यक्ति निर्भय हो जाता है। जन्म मरण का वहम दूर हो जाता है। शरीर में रहता हुआ भी उन वृत्तियां जो को भय पैदा करती थीं उन से मुक्त हो जाता है उनकी परवाह नहीं करता। यही गुरु नानक साहब ने अपने शब्द में लिखा है', एक ओंकार, सतनाम, कर्त्ता पुरुष निर्भय निर्वैर, अकाल मूर्ति अजूनी, स्वयभूमि गुरप्रसाद, । तो वो आदमी गुरु के परशाद से निर्भय हो जाता है। यही हमारा अन्तिम परिणाम है। यह सबसे बड़ा आशीर्वाद है जो हमें पूरे गुरु से मिलती है। हजूर परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज ने अपने इस दास को केवल एक बार अभय होने का आशीर्वाद दिया था।

"यह भी रुप पियारा मोको, इस ही से उसको समझाओ।
बिन इस रुप काज नहीं होई, क्यों करि वाहि लखाओ।"

देखो स्वामी जी महाराज कितनी भेद की बात कह रहे हैं जो

जो लोग बाहर के देहधारी गुरु की असलियत को नहीं जानते, गलती करते हैं। असलीयत बनावट में छुपी हुई होती है। इस लिए फरमा रहे हैं कि आपका यह भी सक्षात रूप मुझे प्यारा है। इससे असली गुरु के रूप को दिखाओ। गुरु की नर देहीकीबड़ी महिमा है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने हजूर परम दयाल महाराज को लिखा था।

"तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगा कर ले जा गुरु के देसा।
तीन ताप से जीव दुखी है निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी।

केवल वह गुरु जो नर देही में आया है, वही अंग लगा सकता है। अंग लगाना हाथ फैलाकर छाती से लगा सकता है। हाथों से छाती में गुरु कितनों को लगा सकता है। अंग लगाने का अर्थ यह है कि नर देही में आया हुआ गुरु अपना असली रूप जो उसके शरीर का एक सूक्ष्म से सूक्ष्म अंग बना हुआ है, वो दान कर देते हैं मैं बडे साफ शब्दों में अपने दिली भाव को सन्तों की बानी द्वारा आपके सामने रख रहा हूँ। मालिक करे आप इसे समझ जाएँ और अपने जन्म को सफल करें।

"ता ते महमा भारी इसकी, पर वह भी लखवाओ।
वह तो रूप सदा तुम धारो, या ते जीव जगाओ॥

इसका अर्थ ऊपर आ चुका है कि आपके इस नर रुप की बड़ी भारी महिमा है क्योंकि इसके द्वारा आप हमें उस गुरु को दिखा सकते हैं।

"यह भी भेद सुना मैं तुम से सुरत शब्द मारग नित गाओ
शब्द रुप जो रुप तुम्हारा, वा में भी अब सुरत पठाओ।

बाहर के सत्गुरु हमें अपने वचनों और दया से सुरत शब्द का साधन करवा कर उस गुरु जिसका रुप शब्द है जिससे हम सब

निकले हुए हैं वहां तक पहुंचा देता है। सब सन्तों ने गुरु को शब्द कहा है और प्रकाश को गुरु के चरण कहा है। यह ज्ञान तब मिलता है जब हम देह धारी गुरु की संगत में जाते हैं और उसके वचन सुनते हैं।

"डरता रहूँ मौत और दुख से, निर्भय कर अब मोहि छुड़ाओ।
दीन दयाल जीव हितकारी, राधास्वामी काज बनाओ।

ध्यान दें राधास्वामी दयाल गुरु को दीन दयाल कहकर पुकार कर रहे हैं क्यों कि उसमें अंग लगाने और अभयदान देने की ताकत है किन्तु वा ताकत वहां प्रयोग करते हैं जो दुनिया के मौत और दुख से भयभीत या डरा हुआ दीन हीन बनकर उन को शरण में आता है जब हम १९४७ में पाकिस्तान से भयभीत होकर घर बार, सम्पत्ति छोड़कर रिफ्यूजी बन कर यानी पनाहगीर बनकर भारत में आए तो भारत सरकार ने हमें फिर से बसाने रोटी कपड़ा और मकान के लिये सुविधा पहुँचाई। यही हाल इस परमार्थ की दुनियाँ में है दीन बन कर पनाहगीर बनकर दीन दयाल की शरण में आना पड़ता है। उसका नर शरीर होने के कारण उसके मन में दया का भाव उठना कुदरती है। इसलिये स्वामी जी महाराज बाहर के गुरु को दीन दयाल कह कर पुकार रहे हैं।

यदि आप स्वामी जी महाराज के शब्दों को ध्यान से पढे तो जब उन्होंने यह शब्द लिखा था क्या वो गुरु थे ? एक साधारण देह धारी थे। गुरु तो तब बने जब सगुन रुपी गुरु ने असली रुप का दर्शन कराया। इस शब्द में स्वामी जी महाराज ने गुरु को दो भाग में बाँटा है एक शारीरिक जो पैदा होता है और मर जाता है दूसरा शब्द स्वरुपी गुरु जो न कभी मरता है और न ही जन्मता है इसीलिये हजूर परम दयाल जी महाराज यह बात लोगों को समझाते रहे कि गुरु का जन्म और मरण दिन मनाना ठीक नहीं। ना समझी है। इस समझ से मानव कल्याण सभा को वो बना गए। इसी विषय

पर अब कबीर साहिब का शब्द सुनिये:—

सतगुरु मोरी चूक संभारो
हों अधीन हीन मति मोरी, चरनन तें जिन टारो

संत कबीर सत्गुरु से प्रार्थना कर रहे हैं कि मेरी गलती ठीक करो। मैं बहुत अधीन हो चुका हूं। अधीन होना क्या है? किसी के मातहत हो जाना। लड़ाई के मैदान में जब शत्रु विजयी हो जाता है तो शस्त्र छोड़ने पड़ते हैं, हाथ खड़े करने पडते हैं। इसी तरह जीव इस मन के अधीन हुए हैं। कोई चारा नहीं चलता। बुद्धि काम नहीं करती इसमें इतनी ताकत नहीं है कि हमें मन से निकाल सकें। तो कबीर साहिब इस हालत से निकलने के लिये सत्गुरु से प्राथना करते हैं कि मैं मन के अधीन होता हुआ मन को ही समझाता हूँ, यह चूक है जिसे अपनी चरण शरण देकर ठीक करो। अगली कड़ी में वो फरमाते हैं:-

मन कठोर कछु कहा न माने वहु वा को कहि हारो।
तुम ही ते सब होत गुसाई, या को बेग संवारो।

मैं भी सारी उम्र गलती करता रहा; मन के ही आधीन होकर मन को समझाता रहा ॥ ६ ॥ मैं मैंने गायत्री मंत्र का जाप शुरु किया और भी कई नामों का सिमरन किया, हवन यज्ञ संध्या करता मन्दिर में भगवान के दर्शन करता और जप, तप कर्म करता भगति ज्ञान और तीर्थ यात्रा आदि करता वो किसी वक्त मन खुश हो जाता और मैं अपने आप को बडा भक्त समझने लग जाता। ऐसा शुरु शुरु में सबको करना पड़ता है इनका मैं खण्डन नहीं करता मगर यह क्या निकलीं? केवल मन को समझाना। बहुत पुस्तके ग्रंथ पढ़े पिछले पीर, औलिया,पैगम्बर अवतारों को माना। अन्त यह भी मन को समझाना ही निकला। तो जब मन को समझा समझा कर आदमी हार जाता है तो उस समय वो गोसाई के आगे प्रार्थना करता है। गोसाई को कह रहे हैं कि मैं तो हार गया आप ही सब

कुछ कर सकते हैं ।

अब दीजे संगत सत्गुरु की जा ते होय निस्तारो ।
और सकल संगी सब बिसरे होइ तुम एक प्यारो ।

अन्त में संत कबीर सत्गुरु गुसाई से बिनती करते हैं कि अब आप अपनी दया मेहर से सत्गुरु की संगत दें जिससे मेरा कल्याण या निस्तारा हो। आप सब गौर फरमाएँ कि संत कबीर भी बाहिर के सतगुरु से प्रार्थना करते हैं कि मुझे सत्गुरु को संगत दो। जब देह धारी सत्गुरु की दया से सत्गुरु की संगत अन्तर में मिल जाती है तो निस्तारा हो जाता है। हमारी सुरत जिन जिन की संगत में फंसी हुई है उन से निकल जाती है उनसे बच जाती। वो शरीर मन आत्मा की संगत में फंसी हुई है। सत्गुरु की संगत इनमें से निकाल लेती है। और फिर सत्गुरु ही से प्रेम रह जाता है, सत्गुरु की एक भगती रह जाती है।

काफी समय के बाद हजूर परम दयाल जी महाराज की दया से मुझे समझ आई कि उन्होंने मुझे पहली चिठ्ठी में क्यों लिखा कि तुम्हारे लिये केवल सत्संग है क्यों कि सतगुरु का सत्संग देना उनके वश में था।

कर देख्यो हित सारे जग से, कोई न मिल्यो पुनि भारो।
कहें कबीर सुनो प्रभू मेरे, भवसागर से तारो।

अन्त में संत कबीर फरमाते हैं कि मैं ने सारे जगत जो कुछ भी मन की सृष्टि थी, उन सबसे प्रेम कर के देख लिया, भक्ति करके देख लो और साधन करके देख लिए मगर आप जैसा कोई पूर्ण सत्गुरु नहीं मिला जो मुझे सत्गुरु की संगत देता। आखिर में कबीर साहिब फरमाते हैं कि भव-सागर से तारो। जब सतगुरु की संगत मिल जाती है वो स्वाभाविक ही धीरे धीरे भवसागर से तर जाता है।

इस शब्द में कबीर साहिब ने देह-धारी गुरु जिस की देह फानी है और उसके अन्दर जो सत्गुरु की शक्ति है जो कि देह के बनने के

बाद आती है वो लाफानी है। बाहर के सत्गुरु और अन्तर के सत गुरु को अलग कर के साफ साफ समझा दिया।

मानव कल्याण सभा चंडीगढ़ से प्रार्थना है कि आप हजूर परम दयाल जी महाराज के जन्म दिन सिलसिले में हर वार्षिक सत्सग में इन विचारों को दुनिया के जीवों तक पहुँचाए तो यह सही अर्थों में सत्गुरु का जन्म दिन मनाना साबित होता है। जिन सज्जनों ने मुझ से सवाल किया था मेरे ख्याल में उनकी तसल्ली हो गई होगी कि हजूर परम दयाल जी महाराज का जन्म दिन केवल यह सच्चाई बताने के लिये है कि गुरु न पैदा होता है न मरता है। राधास्वामी

भगत

—+—

हुशियारपुर
१९-४-७३
राधास्वामी

प्यारे दुर्गादास जी

मेरे पास इतना समय नहीं कि लम्बी २ चिट्ठियां लिखूं मेरा साहित्य मनुष्य बनो, शिव हिन्दी' दयाल उर्दू और अन्य साहित्य पढ़ा करो। कोई प्रश्न ऐसा नहीं जिसका उत्तर तुम्हें न मिल सके। तुम होमियोपैथिक डाक्टर भी हो होमियो दवाई से जो Symptoms पैदा होते हैं वही दवाई यदि उन Symptoms वाले मरीजों को दी जाए तो वह ठीक हो जाते हैं। ऐसे ही सृष्टि की रचना शब्द व प्रकाश से होनी है और इस रचना में दुख सुख हमको मिलता है। शब्द व प्रकाश के साधन से ही यह दुख सुख व रोग समाप्त हो सकते हैं। मैं कल २०-४- को प्रातः अमेरिका की ओर जा रहा हूं।

आपका फकीर

हुशियारपुर
३-५-७३
राधास्वामी

२४–प्यारे दुर्गादास चमन

आपका पत्र आया। उत्तर के लिए जवाबी कार्ड भी नहीं भेज सकते। प्रश्न ऐसे करते हो जिन का उत्तर लिखित रूप में नहीं दिया जा सकता। पहले आप इन केन्दों पर ठहर कर अनुभव के आधार पर किसी को बताने का हक रखते हो। पुस्तकीय ज्ञान पण्डितों का काम है। प्रत्येक व्यक्ति इस संसार में खास २ काम के लिये आता है और कर्मों के अनुसार ही उसका झुकाव उस ओर होता है आप आमिल बनो। पुराने सस्कार जो चिदाकाश पर पड़े हैं। वह स्वप्न या अभ्यास में अवश्य फुरेंगे। जाग्रत में मनुष्य उनको भूल सकता है मेरे स्वप्न में अभी तक भी रेल गाड़ी और तार आ जाती हैं। मगर मन्दिर या आप लोग कभी नहीं आते। बाकी जब मिलेंगे।

आपका फकीर

सफलता के साधन

महर्षि शिवव्रत लाल वर्णन

सृष्टि में कोई वस्तु गरज अर्थ या प्रयोजन रहित नहीं हैं। चाहे जिस वस्तु को अथवा उस वस्तु के किसी भाग को देखो, तनिक ध्यान देने से पता लग जायगा कि इसकी उपस्थिति किसी विशेष गरज, अर्थ या प्रयोजन के लिये है। यदि किसी जगह किसी वस्तु और किसी वस्तु के किसी भाग अंश या अंग में गरज, अर्थ या प्रयोजन की सम्भावना है तो फिर समझ लो कि रचना या अस्तित्व का कोई लोक अर्थ रहित नहीं हैं। अतः सिद्ध हुआ कि प्रत्येक वस्तु के आकार में आने और प्रत्यक्ष होने का प्रयोजन है। अतएव हमारे हाथ पाँव, आँख नाक आदि भी यों ही नहीं किन्तु प्रयोजन को दृष्टि में रखकर बनाये गये हैं। हम न बिना गरज या प्रयोजन के कोई काम करते हैं और न बिना गरज के किसी का साथ देते हैं। मकान बनाना, विद्या का पढ़ना, जीविका उपार्जन सामाजिक संगठन, राजनैतिक उपाय, नदी नाले, पहाड़, जंगल फूल, काँटे मनुष्य, पशु

कीड़े; मकोड़े, अभिप्राय यह है कि छोटी बड़ी प्रत्येक वस्तु की कोई न कोई गरज है और यह गरज़ जीवन चलाने या विताने को प्रगट करने के लिये शक्तिशाली साधन है।

जीवन अहंकार और अहंकार के बढ़ने का दूसरा नाम है। जहाँ अहंकार है वहाँ उसकी गरज़ भी है। गरज़ का होना अहंकार से रहित नहीं है। गरज़ क्या है स्वार्थ है। 'स्व' का अर्थ 'अपने' और अर्थ के माने प्रयोजन के हैं। अपने निजी मतलब को स्वार्थ कहते हैं इस स्वार्थ की जड़ में इच्छा रहती है। इच्छा का दूसरा नाम वासना है। जो संस्कृत धातु 'वस' अर्थात रहने पलटने चाहने से निकला है। हम जिसमें बसते हैं हम जिसमें लिपटे और ढके रहते हैं और जिसके बिना हम रह नहीं सकते वही हमारी वासना है, मनोरथ है जीवन है। इच्छा के अनुसार काम काज हमारो आजीविका का ढंग हमारा शिष्टाचार और सभ्यता होते हैं। इन शब्दों पर तनिक ध्यान देने से भली प्रकार समझ में आ जाता है कि हमारा जीवन भी स्वार्थ से बंधा हुआ है। बल्कि अधिक स्पष्ट शब्दों में यह स्वार्थ ही हमारा जीवन है। यदि गरज़ या स्वार्थ न होता तो हम कभी जीवित न होते न जीवित रह सकते। न हमारे जीवन का प्राकट्य होता न हम कोई काम करते और न कभी दुनियाँ में आते। स्वार्थ ही सब कुछ है। निःस्वार्थ कहने सुनने और स्वार्थ के प्रगट करने का दूसरा रूप है।

स्वार्थ के कारण ज्ञान और सारतत्व सम्भव है। यह नींव है जिस पर कर्म, उपासना, ज्ञान और भक्ति के ऊँचे और शोभायमान भवन बनाये जाते हैं। यह न होता तो उन सब की स्थिति न होती। इस स्वार्थ के साथ सदा आशा रहती है जो इसका दूसरा रूप है कहा गया है दुनिया आशा पर कायम हैं। यह आशा जीवन की लहरों से भरपूर है। आशा संस्कृत शब्द 'अस' होना से यही जीवन हैं। इसके बिना कुछ नहीं होता। सामान

लुप्त हो जाते हैं। धन सम्पति नष्ट हो जाती हैं किन्तु यदि कोई वस्तु है जो हमसे एक क्षण के लिये भी अलग नहीं है तो वह केवल आशा है जिसके सहारे २ यह समस्त रचना निर्भर है। हर समय हमारी आँखों के सामने नाचती रहती है और क्षण मात्र को भी साथ नहीं छोड़ती। जागते सोते, उठते बैठते, चलते, फिरते, सोचते समझते समय हर घड़ी यह हमारे साथ रहती है। इससे अधिक वफादार या सच्चा मित्र कौन हो सकता है। दुनियाँ को तुम झूठा कहो लेकिन आशा को झूठा नहीं कह सकोगे। अंधेरा हो या उजाला आशा कभी आज तक न हम से अलग हुई न होगी और न हो सकती है। इस बात को साधारण बुद्धि का आदमी भी समझ सकता हैं। यह आशा गरज, स्वर्थ और वासना है। उसकी यह दशा है तो कोई क्यों कहे और उसे कहने का अधिकार क्या है कि स्वार्थ बुरा है अथवा स्वार्थी बुरा है।

अदम से जानिवे हस्ती तलासे यार में आये।
हवाये गुल में हम इस वादिये पुरखार में आये।

विषय स्पष्ट है। यहाँ हमारे आने का कोई न कोई गरज स्वार्थ या प्रयोजन है। अब केवल इतना समझना बाकी रह गया है कि वह क्या है। विभिन्नता के जगत में सिद्धात रूप से तो वह एक ही है किन्तु उसको वर्णन शैली में अन्तर है। कोई इसे कुछ समझ रहा है और कोई कुछ जान रहा है। यह अच्छा भी है क्यों कि प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग पर नवीनता के साथ उसको प्रगट करने, प्राप्त करने और जान लेने का अधिकार प्राप्त है ताकि जीवन व्यथ में दूसरों के अनुकरण को खंदक में गिरने पड़ने से बचा रहे।

तुम किसी स्वार्थ इच्छा या प्रयोजन को लेकर यहाँ आये हो और जिस प्रकार चाहो उसकी पूर्ति में लगो।

शेष अगले अंक में।

॥ । मनुष्य बनो ॥

बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

[illegible]शन का स्थान	:	अलीगढ़
[illegible] अवधि	:	मासिक
नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
	:	भारतीय
	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। उत्तर प्रदेश
नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
[illegible]	:	भारतीय
	:	शिव भवन, लेखराज नगर अलीगढ़
[illegible]म्पादक का नाम		श्री श्रीमती सुधा मीतल
[illegible]ष्ट्रीयता		भारतीय
[illegible]	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
[illegible]धिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
[illegible]शक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

[illegible] सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी [illegible]नकारी और विवरण के अनुसार सही है।

[illegible]क १५ अक्टबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. No. L-ALG-28

पुस्तकें

हमारे यहां
महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज
कृत
हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।
डाक खर्च सब का अलग है।
पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—
कार्यालय
मनुष्य बनो
शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० 146
श्री

प्र० स० सम्पादक — महेशचन्द्र मीतल
सम्पादक
व्यवस्थापक व प्रकाशक—
श्रीमती सुधा मीतल,
शिव भवन, लेखराज नगर

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Al